प्रश्न :- टिहरी बाँध परियोजना से बिजली उत्पादन प्रारम्भ हुआ
- 2006, 18 जुलाई

टिहरी बाँध → भागीरथी और भिलंगना 2 नदियों के संगम पर स्थित भारत सरकार के इस बहुउद्देश्य परियोजना के तहत 260.5 मी० ऊँचा काफर-बांध (मिट्टी-पत्थर) निर्मित बांध का निर्माण किया गया है जो एशिया का सबसे ऊँचा तथा दुनिया का चौथा सबसे ऊँचा बाँध है

यह केन्द्र व U.P सरकार की संयुक्त परियोजना है। योजना आयोग ने 1972 में इस परियोजना को स्वीकृति दी तथा 1978 में U.P सिंचाई विभाग ने इस पर कार्य करना आरम्भ किया। धीमी गति से कार्य करने के कारण केन्द्र ने 1988 में इस बाँध के निर्माण की जिम्मेदारी (THDC) टिहरी बाँध निगम को सौंपी जिसने 1989 से कार्यकरना आरम्भ किया

टिहरी योजना 2400 mw की योजना है जिसके प्रथम चरण ने 1000 mw बिजली उत्पादन 18 जुलाई 2006 से शुरु किया। जबकि दूसरे चरण में 1000 mw का टिहरी स्टोरेज पम्प प्लांट व 400 mw की कोटेश्वर परियोजनाएँ है।

इस बाँध का क्षे० 42 वर्ग किमी में फैली है। इसके जलाशय को स्वामी रामतीर्थ सागर कहा जाता है। इस परियोजना से 9 राज्यों को सुविधाएँ प्राप्त होती है। उत्तराखण्ड को 12% रायल्टी प्राप्त होती है। इस परियोजना से दिल्ली को प्रतिदिन 300 व U.P को 200 क्यूसेक पेय जल मिलता है। वर्तमान में इस परियोजना से 6.04 हेक्टेयर को स्थाई व 2.7 अतिरिक्त सिंचाई सुविधा उपलब्ध है।

इस बाँध का डिजाइन जेम्स ब्रून ने बनाया। शुरुआत में यह परियोजना 600 mw की थी परन्तु 1986 में रूस के सहयोग से यह परियोजना का विस्तार हुआ

UTTARAKHAND EXAM NOTES

इस परियोजना के विरोध में सर्वप्रथम आवाज राजमाता कमलेन्दुमति शाह ने उठायी। 1978 में टिहरी बाँध के विरोध में विद्यासागर नौटियाल की अध्यक्षता में बाँध विरोधी समिति बनायी गयी। इस परियोजना को 'राष्ट्र के गाँव' की संज्ञा' दी गयी है

प्रश्न ÷ कुँमाऊ मण्डल विकास निगम की स्थापना कब हुयी
— 1966

प्रश्न - तिलाडी कांड का सम्बन्ध किस से था ?
- वन अधिकारो से

तिलाडी कॉड → 30 मई 1930 को घटित तिलाडी कांड या रंवाई कांड को टिहरी का जलियां वाला कांड भी कहते है। स्वतन्त्रता से पूर्व टिहरी के राजा नरेन्द्र शाह के समय एक नया वन कानून लागू किया गया जिसके तहत यह व्यवस्था थी की किसानो की भूमि को वन भूमि में शामिल किया जायेगा। इस व्यवस्था के खिलाफ रंवाई की जनता ने विद्रोह शुरु कर दिया। 1930 के इस आन्दोलन की व्यवस्था प्रमुख विशेषता यह थी की इसका नेतृत्व करने वाले रंवाई के साधारण किसान थे। अपने अधिकारो की रक्षा के लिए रंवाई के लोगो ने इस जनआन्दोलन का श्रीगणेश किया। इस आन्दोलन का नेतृत्व श्री हीराराम, दयाराम व बैजराम ने किया और 1930 में आजाद पंचायत का गठन किया

30 मई 1930 को इस आन्दोलन के खिलाफ तिलाडी मैदान में चक्रधर जुयाल ने गोलियाँ चलवा दी। इसलिए इस आन्दोलन को टिहरी का जालियाँवाला कहा जाता है

चक्रधर जुयाल को जरनल डायर कहा जाता है

अल्मोड़ा

- **मानिलादेवी** : अल्मोड़ा

विकासखण्ड भिक्यासैंण के ग्राम कमराड़ एवं इण्डा तथा विकासखण्ड स्याल्दे के ग्राम तल्ला घनेटा कमान एवं मल्ला में मानिलादेवी के पूजा स्थल विद्यमान है। . . . .

- **दीपा माई** – दीपामाई का मूल पूजास्थल भिक्यासैंण के ग्राम थानी में है (अल्मोड़ा) और यहीं इस देवी की उत्पत्ति भी हुई।

- **अन्यारीदेवी** –

'अन्यारी' 'अन्धियारी' का स्थानीय नाम है ग्राम सैणीसेरा में अन्यारी देवी का पूजा स्थल है . . . . .

- **देखतदेवी** –

स्थानाश्रित नाम वाली देखत देवी विशुद्ध रूप से एक ग्राम - देवी है, जिसका एक मात्र पूजा स्थल विकास खण्ड भैंसियाछीना के ग्राम खांकरी में है। . . . . .

- **ज्वालादेवी** –

शिव - प्रिया सती के एक स्थानीय नाम-रूप में ज्वाला देवी के नाम से ग्रामीण पूजा स्थल विकासखण्ड भैंसिया छीना के ग्राम पल्यूं में अवस्थित है . . . . .

* **नेथणादेवी** – नेथणा देवी का मुख्य पूजा स्थल भिक्यासैंण के गांव नौबड़ा में है मंदिर की स्थापना संबन्धी जनश्रुति के अनुसार निकटवर्ती मुनिआन्चौरा के एक कृषक की गाय रात्रि के समय पहाड़ी के ऊपर झाड़ियों में अपना दूध विसर्जित कर देती थी, जिस कारण सुबह गाय को दुहने पर कृषक को दूध नहीं मिल पाता था . . . .